بِسۡمِ اللّٰہِ الرَّحۡمٰنِ الرَّحِیۡمِ نَحۡمَدُہٗ وَنُصَلِّیۡ عَلٰی رَسُوۡلِہِ الۡکَرِیۡمِ وَعَلٰی عَبۡدِہِ الۡمَسِیۡحِ الۡمَوۡعُوۡد
لَا اِلٰہَ اِلَّا اللّٰہُ مُحَمَّدٌ رَّسُوۡلُ اللّٰہِ

دفتر مجلس انصاراللہ بھارت

Office Of The Majlis Ansarullah Bharat

Mohallah Ahmadiyya Qadian-143516, Distt.Gurdaspur (Punjab) INDIA

Mob.9682536974,E-Mail :ansarullah@qadian.in KhulasaKhutba-17.06.2022 محلہ احمدیہ قادیان ۱۴۳۵۱۶ ضلع: گورداسپور (پنجاب)

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु तआला अन्हु के सद्गुणों पर चर्चा के अतंर्गत आप रज़ी. की ओर से भेजी गए अभियानों का वर्णन तथा इन अभियानों में सहाबा किराम रिज़वानुल्लाहि तआला अलैहिम अजमअीन के महान बलिदाना का अत्यंत ईमान वर्धन वर्णन

सारांश ख़ुत्बः सय्यदना अमीरुल मोमिनीन हज़रत मिर्ज़ा मसरूर अहमद ख़लीफ़तुल मसीह अल-ख़ामिस अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़, बयान फ़र्मूदा 17 जून 2022, स्थान मस्जिद मुबारक इस्लामाबाद, टिलफ़ोर्ड यू.के.

أَشْهَدُ أَنْ لَا إِلٰهَ إِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهُ لَا شَرِيْكَ لَهُ وَأَشْهَدُ أَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهُ وَرَسُوْلُهُ

اَمَّا بَعْدُ فَاَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنَ الشَّيْطٰنِ الرَّجِيْمِ - بِسْمِ اللّٰهِ الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ رَبِّ الْعَالَمِيْنَ - الرَّحْمٰنِ الرَّحِيْمِ - مَالِكِ يَوْمِ الدِّيْنِ - إِيَّاكَ نَعْبُدُ وَإِيَّاكَ نَسْتَعِيْنُ - اِهْدِنَا الصِّرَاطَ الْمُسْتَقِيْمَ - صِرَاطَ الَّذِيْنَ أَنْعَمْتَ عَلَيْهِمْ غَيْرِ الْمَغْضُوْبِ عَلَيْهِمْ وَلَا الضَّآلِّيْنَ -

तशह्हुद तअव्वुज़ तथा सूरः फ़ातिहः की तिलावत के बाद हुज़ूर-ए-अनवर अय्यदहुल्लाहु तआला बिनस्रिहिल अज़ीज़ ने फ़रमाया- हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ रज़ीयल्लाहु अन्हु के ज़माने में गयारह सैन्य अभियान हुए थे। पहला सैन्य अभियान जो काफ़ी लम्बा था वह तो बयान हुआ शेष दस अभियानों में से दो तथा तीन के वर्णन में यह आता है कि हज़रत हुज़ैफ़ा और हज़रत अर्फ़जा के द्वारा यह अभियान सफल हुआ जो अम्मान के मुर्तद विद्रोहियों के विरुद्ध था। अम्मान बहरीन के निकट यमन का एक नगर है यहाँ बुतों को पूजने वाले तथा मजूसी रहते थे। आँहज़रत सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के पवित्र दौर में अम्मान ईरानियों के कार्य-क्षेत्र में शामिल था तथा उनकी ओर से जैफ़र नामक व्यक्ति कार्यवाहक के रूप में नियुक्त था। आँहज़रत सल्लल्लाह अलैहि वसल्लम के निधन के बाद जब अरब में चारों ओर इस्लाम से विमुखता तथा विद्रोह फैल गया तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत उमरू बिन आस को अम्मान से मदीना आने का निर्देश दिया। दूसरी ओर रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के निधन के पश्चात लक़ीद बिन मालिक अज़दी नामक व्यक्ति उनमें उठा जिसकी उपाधि जुलताज थी, उसने नबुव्वत का दावा कर दिया तथा अम्मान के मूर्ख लोगों ने

उसका अनुसरण कर लिया। इसने अम्मान पर क़ब्ज़ा कर लिया तथा जैफ़र व उसके भाई अबाद को पहाड़ों में शरण लेनी पड़ी। जैफ़र ने हज़रत अबू बकर रज़ी. को इस पूरी घटना के विषय में सूचित किया तथा सहायता मांगी। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उनके पास दो अमीर भेजे। एक हुज़ैफ़ा बिन मोहसिन ग़लफ़ानी हमीरी को अम्मान की आर तथा दूसरे अर्फ़जा बिन हर्समा को मारा नामक स्थान की ओर, तथा आदेश दिया कि वे दोनों साथ साथ यात्रा करें तथा युद्ध को अम्मान से शुरु करें। मारा यमन के एक क़बीले का नाम था तथा आदेश दिया कि जब अम्मान में युद्ध हो तो हुज़ैफ़ा क़ायद होंगे और जब मारा में युद्ध हो तो हुज़ैफ़ा सेनापति का पद संभालेंगे।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने इन दोनों की सहायता के लिए हज़रत इकरिमा अबू जहल को भेजा। हज़रत अबू बकर के आदेशानुसार इकरिमा अपनी सेना के साथ अम्मान की आर अर्फ़जा और हुज़ैफ़ा की पीछे पीछे रवाना हुए तथा इससे पहले कि वे दोनों अम्मान पहुंचते इकरिमा अम्मान के निकट एक रजाम नामक स्थान में दोनों जा मिले और उन्होंने जैफ़र और उसके भाई अबाद के पास अपना सन्देश भेज दिया। मुसलमान सेना के सेनापति का सन्देश मिलने के बाद जैफ़र तथा अबाद अपने अपने शरण स्थानों से निकले जो पहले छुप गए थे तथा उन्होंने सहार नामक स्थान पर आकर पड़ाव किया और हुज़ैफ़ा और अर्फ़जा और इकरिमा को कहला भेजा कि आप सब हमारे पास आ जाएँ। अतः मुसलमानों की सेना सहार में जमा हो गई तथा उससे मिले हुए क्षेत्रों को मुर्तदों से पाक कर दिया। उधर लक़ीद बिन मालिक को इस्लामी सेना के पहुंचने की सूचना मिली तो वह अपनी सेना लेकर मुक़ाबले के लिए निकला तथा दबा नामक स्थान पर आकर ठहरा। दबा नामक स्थान पर लक़ीद की सेना के साथ घमसान का युद्ध हुआ। आरम्भ में लक़ीक का पक्ष भारी रहा तथा ऐसा लगता था कि मुसमान पराजित हो जाते किन्तु फिर लक़ीद की सेना के पाँव उखड़ गए तथा वह भाग खड़ा हुआ। मुसलमानों ने उनका पीछा किया तथा दस हज़ार यौद्धाओं को मार डाला तथा बच्चों एवं महिलाओं को बन्दी बना लिया, धन सम्पत्ति पर क़ब्ज़ा कर लिया तथा उसका पाँचवां भाग उर्फ़जा के हाथ हज़रत अबू बकर रज़ी. की सेवा में भिजवा दिया। इस प्रकार अम्मान में भी यह फ़ितना समाप्त हो गया और मुसलमानों का शासन सुदृढ़ रूप से स्थापित हो गया।

युद्ध के बाद हुज़ैफ़ा ने अम्मान ही में निवास कर लिया तथा यहाँ की स्थिति को ठीक करने एवं अमन शांति स्थापित करने में व्यस्त हो गए और अर्फ़जा युद्ध से प्राप्त धन सम्पत्ति लेकर मदीना चले गए। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने हज़रत इकरिमा को पहले ही आदेश दे रखा था कि जब तुम हुज़ैफ़ा तथा अर्फ़जा की सहायता करने का काम कर लो तो फिर मेहरा चले जाना, फिर वहाँ से यमन चले जाना, यहाँ तक कि यमन और हिज़्रे मौत नामक स्थान की गतिविधियों में महाजिर बिन अबू उमय्या के साथ रहना तथा अम्मान और यमन की बीच में जिन लोगों ने इस्लाम स विमुखता दिखाई है उनका दमन करना और मुझे युद्ध में तुम्हारी विशेष सफलताओं की सूचना मिलती रहे। इस प्रकार हज़रत इकरिमा मुसलमानों की विशाल सेना के साथ दूसरे मुशरिकों का दमन करने के लिए आगे बढ़ गए।

उन्होंने मेहरा से अपनी सैन्य कार्यवाही को आरम्भ किया। इकरिमा ने मेहरा क़बीले तथा उसके आस पास के इलाक़ों पर चढ़ाई कर दी। उनके मुक़ाबले के लिए मेहरा के लोग दो गुटों में बंट गए। एक गुट जैरूत नामक स्थान पर शख़रियत नामक व्यक्ति के नेतृत्व में मोर्चा लगाए हुए था और दूसरा दल नजद नामक स्थान पर बनू महारिब के एक व्यक्ति मस्बा के नतृत्व में था। ये दोनों सरदार एक दूसरे के विरोधी थे। जब इकरिमा ने शख़रियत के साथ थोड़ी संख्या में लोग देखे तो उन्होंने उसे इस्लाम की ओर वापस पलटने का निमंत्रण दिया, यह पहले मुसलमान था, इकरिमा ने निमंत्रण दिया कि दोबारा मुसलमान हो जाओ तथा अब मुसलमानों से युद्ध न करो। अतः इस आरम्भिक प्ररणा पर ही शख़रियत ने उनके निमंत्रण को स्वीकार कर लिया। फिर इकरिमा ने मस्बा को इस्लाम की दावत दी, उसने इंकार कर दिया। अतएव इकरिमा ने उसकी ओर क़दम बढ़ाया और शख़रियत भी आपके साथ था। इन दोनों का नजद में मुक़ाबला हुआ। अल्लाह ने मुर्तद विद्रोहियों की सेना को पराजित किया तथा उनका मुख्या मारा गया। मुसलमानों ने भागने वालों का पीछा किया तथा उनमें से एक बड़ी संख्या का वध किया तथा अधिकांश लोगों को बन्दी बना लिया तथा युद्ध से प्राप्त धन सम्पत्ति में दो हज़ार अच्छी नस्ल की ऊँटनियाँ भी मुसलमानों के हाथ आईं।

हज़रत अबू बकर सिद्दीक़ ने हज़रत इकरिमा को निर्देश दिया था कि मेहरा के बाद यमन चले जाना तथा हिज़्रे मौत नामक स्थान की गतिविधियों में हज़रत महाजिर बिन अबू उमय्या के साथ रहना तथा अम्मान व यमन के बीच जिन लोगों ने इस्लाम से विमुखता दिखाइ है उनका दमन करना। अतः हज़रत इकरिमा हज़रत अबू बकर रज़ी. के आज्ञा पालन में मेहरा से निकल कर यमन की ओर रवाना हो गए। हज़रत इकरिमा ने अपना स्थाई निवास दक्षिणी यमन में ही रखा तथा वहाँ नख़ा एवं हमीर के क़बीलों को दबाने में व्यस्त रहे तथा उत्तरी यमन की ओर बढ़ने की नौबत ही न आई। यमन के साथ ही क़न्दा नामक क़बीला आबाद था जो हिज़्रे मौत के इलाक़े में था। उस इलाक़े के कार्य-कर्ता हज़रत ज़ियाद बिन लबीद थे, उन्होंने ज़कात के बारे में कठोरता दिखाई तो उनके विरुद्ध बग़ावत हो गई। अतः हज़रत इकरिमा तथा हज़रत महाजिर बिन उमय्या दानों उनकी सहायता के लिए पहुंचे।

अतएव जब हज़रत इकरिमा मुर्तदों के अभियानों से निमट लिए तो फिर मदीना लौट गए। जब आप मदीना पहुंचे तो हज़रत अबू बकर रज़ी. ने आपको आदेश दिया कि ख़ालिद बिन सईद की सहायता के लिए रवाना हो जाएँ। हज़रत इकरिमा ने अपनी सेना को, जिसने आपके साथ मुर्तदों के युद्धों में शिरकत की थी, छुट्टी दे दी थी। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने उनके बदले दूसरी सेना तय्यार की तथा उन्हें आदेश दिया कि इकरिमा के झंडे तले शाम देश को रवाना हा जाएँ। वहाँ हज़रत इकरिमा ने जो विशेष सफलता प्राप्त की तथा बड़ी दलेरी से लड़ते हुए शहादत का उच्च पद प्राप्त किया उसका विवरण इन्शाअल्लाह शाम के अभियानों में बयान हो जाएगा।

पाँचवां अभियान हज़रत शुरहबील बिन हसना के मुर्तद बाग़ियों के विरुद्ध था। हज़रत शुरहबील आरम्भिक इस्लाम लाने वालों में से थे। आपने अपने भाईयों के साथ हब्शा की ओर हिजरत की और

जब हब्शा से वापस आए तो मदीना में आप बनू ज़रीक़ के मकानों में ठहरे। ख़िलाफ़त ए राशिदह में ये प्रसिद्ध सेनापतियों में से थे। अठारह हिजरी में 67 वर्ष की आयु में ताऊन अमवास की बीमारी में वफ़ात पाई।

छटा सैन्य अभियान जो है यह अमरू बिन आस के मुर्तद बाग़ियों के विरुद्ध अभियान था। हज़रत अबू बकर रज़ी. ने एक झंडा हज़रत अमरू बिन आस को दिया था और उनको तीन क़बीलों क़ज़ाअः, वदीअः तथा हारिस के मुक़ाबले पर जाने का आदेश दिया था। कज़ाअः भी अरब का एक विख्यात क़बीला है जो मदीना से दस मंज़िल पर क़ुरा नामक घाटी से आगे मदायने सालेह के पश्चिम में आबाद है। हज़रत उमरू बिन आस का संक्षिप्त परिचय यह है कि आपके पिता जी का नाम आस बिन वाइल, आपकी माता जी का नाम नाबग़ा सुपुत्री हर्मला था। हज़रत उमरू बिन आस ने आठ हिजरी में मक्का पर विजय से छः महीने पहले इस्लाम क़बूल किया। उनके कीर्तिमानों में से एक विशिष्ट कीर्तिमान मिस्र देश पर विजय भी है।

हज़रत अबू बकर रज़ी. ने जो गयारह विजय पताकाएँ तय्यार कराई थी उनमें से एक झंडा हज़रत उमरू बिन आस के लिए भी था। आपने उन्हें कज़ाअः के मुर्तदों से युद्ध करने का काम दिया क्यूँकि व रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के जीवन काल में भी ज़ातुस्सलासुल नामक लड़ाई में भी कज़ाअः क़बीले से लड़ चुके थे और उस क़बीले के समस्त मार्गों तथा परिस्थितयों को भली भांति जानते थे। बनू कज़ाअः ख़ुशी से इस्लाम में दाख़िल न हुए थे, उनके दिल इस्लाम की मुहब्बत से वंचित थे अतः रसूलुल्लाह सल्लल्लाहु अलैहि वसल्लम के देहान्त के पश्चात उन्होंने ज़कात देने से इंकार कर दिया। ख़िलाफ़त के दरबार से आदेश मिलते ही अमरू बिन आस अपनी सेना के साथ क़ज़ाअः पहुंच गए। वहाँ पहुंच कर उन्होंने देखा कि बनू क़ज़ाअः युद्ध के लिए पूरी तरह तय्यार हैं। मुक़ाबला शुरु हुआ, घमसान कर रण पड़ा, पहले की तरह अब भी बनू क़ज़ाअः को पराजित होना पड़ा और हज़रत अमरू बिन आस उनसे ज़कात लेकर उन्हें दोबारा इस्लाम की शीतल छाया की परीधि में लाकर सफल एवं विजयता क रूप मं मदीना वापस आ गए। हुज़ूर-ए-अनवर ने फ़रमाया- शेष सैन्य अभियानों का वर्णन इन्शाअल्लाह आगे होगा।

اَلْحَمْدُ لِلّٰهِ نَحْمَدُهٗ وَنَسْتَعِيْنُهٗ وَنَسْتَغْفِرُهٗ وَنُؤْمِنُ بِهٖ وَنَتَوَكَّلُ عَلَيْهِ وَنَعُوْذُ بِاللّٰهِ مِنْ شُرُوْرِ اَنْفُسِنَا وَمِنْ سَيِّئَاتِ اَعْمَالِنَا مَنْ يَّهْدِهِ اللّٰهُ فَلَا مُضِلَّ لَهٗ وَمَنْ يُّضْلِلْهُ فَلَا هَادِيَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنْ لَّا اِلٰهَ اِلَّا اللّٰهُ وَحْدَهٗ لَا شَرِيْكَ لَهٗ وَاَشْهَدُ اَنَّ مُحَمَّدًا عَبْدُهٗ وَرَسُوْلُهٗ، عِبَادَ اللّٰهِ رَحِمَكُمُ اللّٰهُ اِنَّ اللّٰهَ يَاْمُرُ بِالْعَدْلِ وَالْاِحْسَانِ وَاِيْتَآءِ ذِي الْقُرْبٰى وَيَنْهٰى عَنِ الْفَحْشَآءِ وَالْمُنْكَرِ وَالْبَغْيِ يَعِظُكُمْ لَعَلَّكُمْ تَذَكَّرُوْنَ فَاذْكُرُوا اللّٰهَ يَذْكُرْكُمْ وَادْعُوْهُ يَسْتَجِبْ لَكُمْ وَلَذِكْرُ اللّٰهِ اَكْبَرُ۔

हिन्दी अनुवाद को अधिक सुन्दर बनाने हेतु सुझाव का स्वागत है, समपर्क करें-9781831652

टोल फ्री सम्पर्क अहमदिया मुस्लिम जमाअत क़ादियान-18001032131